**राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत**
**शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा**

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | प्रथमम् | DSCC-16 | काव्यस्वरूपं शब्दवृत्तयश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. मम्मटसम्मतं काव्यस्वरूपम्**<br>• मम्मटस्तस्य काव्यप्रकाराश्च<br>• मङ्गलपद्ये ध्वनितं काव्यस्वरूपम्<br>• काव्यस्य प्रयोजनम्<br>• काव्यस्य कारणम्<br>• काव्यस्य स्वरूपम्<br>• काव्यस्य भेदाः | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. शब्दवृत्तयः**<br>• शब्दार्थभेदाः<br>• अर्थस्य व्यञ्जकत्वम्<br>• अभिधा<br>• संकेतग्रहः<br>• लक्षणा<br>• व्यञ्जना | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. व्यञ्जनाविषयकः पूर्वपक्षः**<br>• अभिधायां व्यञ्जनाया अन्तर्भावः<br>• लक्षणायां व्यञ्जनाया अन्तर्भावः<br>• अखण्डवाक्यार्थवादः<br>• अनुमाने व्यञ्जनाया अन्तर्भावः | 1 | | 16+04 |
| | | | **4.. व्यञ्जनाविषयक उत्तरपक्षः**<br>• अभिधायामन्तर्भावस्य निराकरणम्<br>• वाच्य-व्यङ्ग्ययोर्भेदः<br>• निमित्तनैमित्तिकविवेकः<br>• मीमांसासूत्रविरोधः<br>• लक्षणायामन्तर्भावस्य निराकरणम्<br>• अखण्डवाक्यार्थवादमतालोचनम्<br>• अनुमाने व्यञ्जनाया अन्तर्भावस्य निराकरणम्<br>• व्यञ्जनाया अनिवार्यता<br>• व्यञ्जनाविषयक उत्तरपक्षः<br>• ध्वनिभेदो रसस्वरूपं च<br>1. ध्वनिभेदः<br>2. रसस्वरूपम्<br>3. रससूत्रस्य व्याख्यानम् | 1 | | 16+04 |

SKmohanty

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **उद्देश्यम्:-** काव्यस्वरूपस्य शब्दशक्तीनां च परिज्ञापनम्।<br>**परिणाम:-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. काव्यस्वरूपपरिज्ञानम् 2. काव्यस्य प्रयोजनज्ञानम् 3. काव्यभेदज्ञानम् 4. काव्ये वृत्तिज्ञानम् 5. व्यञ्जनाज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थ:-** 1.काव्यप्रकाशः(निर्धारितांशाः), मम्मटः, भट्टवामनाचार्यः, (झलकीकरः), परिमल- पब्लिकेशनम्, दिल्ली, 2008<br>**सहायकग्रन्थ:-** 1.काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा.सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>4.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | | |

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत**
**शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा**

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्र-कूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | प्रथमम् | DSCC-17 | **ध्वनिसिद्धान्तः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. ध्वनिप्रस्थानपरम्परा**<br>• ध्वन्यालोकस्य परिचयः<br>• ध्वन्यालोकस्य वैशिष्ट्यम्<br>• आनन्दवर्धनस्य शास्त्रवैदग्ध्यम्<br>• ध्वनेः काव्यात्मत्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. ध्वनिस्थापनम्-**<br>• ध्वनेः अभाववादः<br>• भाक्तवादः अनिर्वचनीयवादः च<br>• प्रतिभाविशेषः वस्तुतत्त्वम्<br>• लक्षणामूलध्वनिः अभिधामूलध्वनिः च | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. ध्वनिप्रकाराः-<br>• अविवक्षितवाच्यध्वनिः<br>• विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनिः<br>• अर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यध्वनिः<br>• अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिः<br>• ध्वनिप्रकाराणाम् उदाहरणानि | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. रसप्रधानाः**<br>• रसप्रधाने काव्ये अलङ्कारस्य सन्निवेशप्रकारः<br>• शब्दशक्तिमूलध्वनिः<br>• अर्थशक्तिमूलध्वनिः<br>• अभिधामूलध्वनिः<br>• गुणीभूतव्यङ्ग्यत्वं<br>• ध्वनिप्रकाराणाम् उदाहरणानि | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्**- ध्वनिविरोधिमतस्य ध्वनिसिद्धान्तस्य च बोधनम्।<br>**परिणामाः**:- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.ध्वनेः महाविषयत्वज्ञानम्,<br>2. ध्वनेः काव्यात्मत्वज्ञानम्,<br>3. ध्वनेः प्रकारतोदाहरणादिज्ञानम्,<br>4. रसादीनां महत्त्वविज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**:- आनन्दवर्धनस्य ध्वन्यालोकः, 1, 2 उद्योतौ।<br>**सहायकग्रन्थाः**:-<br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007. | | | |

Srmahanty

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघूत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

Skmahanty

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-प्रथमवर्षम् | प्रथमम् | DSCC 18 | **पण्डितराजदिशा काव्यस्य लक्षणम्, भेदाः, कारणं, रसस्वरूपं च**<br>**१. काव्यलक्षणम्**<br>• पण्डितराजजगन्नाथस्य परिचयः<br>• साहित्यशास्त्रे रसगङ्गाधरस्य स्थानम्<br>• मङ्गलाचरणम्<br>• काव्यलक्षणविचारः<br>**२. काव्यकारणम्**<br>• ममटोक्तकाव्यलक्षणखण्डनम्<br>• विश्वनाथोक्तकाव्यलक्षणखण्डनम्<br>• प्रतिभा<br>• व्युत्पत्त्यभ्यासौ<br>**३. काव्यभेदाः**<br>• उत्तमोत्तमकाव्यम्<br>• उत्तमकाव्यम्<br>• मध्यमकाव्यम्<br>• अधमकाव्यम्<br>**४. रसस्वरूपम्**<br>• जगन्नाथमतेन रससूत्रव्याख्या<br>• अभिनवगुप्तसम्मतस्य रसस्वरूपस्य जगन्नाथदृष्ट्या व्याख्यानम्<br>• भट्टनायकसम्मतस्य रसस्वरूपस्य जगन्नाथदृष्ट्या व्याख्यानम्<br>• नव्यमतं अन्येषां मतानुसारं रसव्याख्यानं च<br>**उद्देश्यम्-** जगन्नाथसम्मतानां काव्यलक्षणभेदानां रसरूपविषयाणाम् एकादशमतानां च बोधनम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.जगनाथोक्तकाव्यलक्षणकारणपरिज्ञानम्<br>2.परकीयादिसम्मतस्य रसस्वरूपस्य परिज्ञानम्<br>3.रससूत्रव्याख्याने अभिनवगुप्तीयस्य व्याख्यानस्य परिज्ञानम्<br>4.भट्टनायकमते रसस्वरूपस्य परिज्ञानम्<br>5.नव्यमतद्वयस्य परिचयावाप्तिः च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-** रसगंगाधरः, पं.जगन्नाथः, बदरीनाथझा-, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016<br>**सहायकग्रन्थाः -**<br>1.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डासुशीलकुमार डे-, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988 | <br><br>1<br><br><br><br><br>1<br><br><br><br><br>1<br><br><br><br><br>1 | 4 | 64+16<br><br>16+04<br><br><br><br><br>16+04<br><br><br><br><br>16+04<br><br><br><br><br>16+04 |

Trmahanty

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डाराजवंश सहाय - हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>3.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ।<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघूत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | प्रथमम् | **DSCC-19** | वंक्रोक्तिसिद्धान्तः | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. कुन्तकसम्मतं काव्यस्य प्रयोजनं लक्षणं च**<br>• कुन्तकस्य परिचयः<br>• वक्रोक्तिजीवितस्य सामान्यपरिचय:<br>• काव्यप्रयोजनम्<br>• काव्यलक्षणम्<br>• शब्दार्थस्वरूपम्<br>• वक्रोक्तिस्वभावोक्तिसमीक्षणम्<br>• साहित्यस्वरूपम् | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **2. वर्णविन्यासाद्याः चत्वारो वक्रोक्तिप्रकाराः**<br>• वर्णविन्यासवक्रता<br>• पदपूर्वार्द्धवक्रता<br>• प्रत्ययाश्रयवक्रता<br>• वाक्यवक्रता | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **3. प्रकरण-प्रबन्धवक्रता, बन्धः, सुकुमारमार्गश्च**<br>• प्रकरणवक्रता<br>• प्रबन्धवक्रता<br>• बन्धस्वरूपम्<br>• बन्धस्याह्लादकारित्वम्<br>• सुकुमारमार्गस्वरूपम्<br>• सुकुमारमार्गस्य गुणाः | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **4. विचित्रमाध्यममार्गः, मार्गसामान्यगुणश्च**<br>• विचित्रमार्गस्वरूपम्<br>• विचित्रमार्गस्य गुणाः<br>• मध्यममार्गस्वरूपम्<br>• मार्गसामान्यगुणौ<br>• औचित्यगुणः<br>• सौभाग्यगुणः | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **उद्देश्यम्**- वक्रोक्तिसिद्धान्तस्य ज्ञापनम्।<br>**परिणामा:**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. वक्रोक्तिप्रकारान् ज्ञास्यन्ति। 2. वक्रोक्तेः प्रयोगान् स्वयं कर्तुं प्रभविष्यन्ति। 3. वक्रोक्तिविवेचनं ज्ञात्वा लक्ष्यग्रन्थान् च विवेचयिष्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थ:**- वक्रोक्तिजीवितम्( प्रथम उन्मेषः)<br>**सहायकग्रन्था:**-1.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा- | | | |

Rkmohanty

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>2. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>3.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ।<br><br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघूत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

Skmahanty